सम्मत्तमग्गणाए बंधसामित्तं

‘एदं पि सुगमं ।’

‘हस्स-रदि-भय-दुगुंछाणं को बंधो को अबंधो ? ।। ३११ ।’

‘सुगमं ।’

‘असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा । अपुव्वकरणुवसमध्दाए चरिमसमयं गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।। ३१२ ।’

‘एदं पि सुगमं ।’

‘देवगइ-पंचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-संठाण-वेउव्वियअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयस-रीर-थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिण-तित्थयरणामाणं को बंधो को अबंधो ? ।। ३१३ ।’

‘सुगमं ।’

< यह सूत्र भी सुगम हैं ।>

‘हास्य, रति, भय और जुगुप्साका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ।। ३११ ।’

< यह सूत्र सुगम हैं ।>

‘असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशमकालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक है ।। ३१२ ।’

< यह सूत्र भी सुगम हैं ।>

‘देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्त्रसंस्थान वैक्रियिकशरीरांगोपांग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवानुपुर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण और तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ।। ३१३ ।’

< यह सूत्र सुगम हैं ।>

‘असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा । अपुव्वकरणुवसमध्दाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।। ३१४ ।’

‘एदं पि सुगमं, बहुसो कयपरुवणादो ।’

‘आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवंगाणं को बंधो को अबंधो ? ।। ३१५ ।’

‘सुगमं ।’

‘अप्पमत्तापुव्वकरणउवसमा बंधा । अपुव्वकरणुवसमध्दाए संखेज्जे भागे गंतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ।। ३१६ ।’

‘एदं पि सुगमं ।’

‘सासणसम्मादिट्‌ठी मदिअण्णाणिभंगो ।। ३१७ ।’

‘असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशमकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ।। ३१४ ।’

< यह सूत्र भी सुगम हैं, क्योंकि, बहुत बार इसकी प्ररुपणा की जाचुकी है । >

‘आहारकशरीर और आहारकशरीरांगोपांगका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ।। ३१५ ।’

< यह सूत्र सुगम हैं । >

‘अप्रमत्त और अपूर्वकरण उपशमक बन्धक है । अपूर्वकरण उपशमकालके संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक है, शेष अबन्धक हैं ।। ३१६ ।’

< यह सूत्र भी सुगम हैं । >

‘सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी प्ररुपणा मत्यज्ञानियोंकेसमान है ।। ३१७ ।’

सम्मत्तमग्गणाए बंधसामित्तं

‘पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-अट्ठणोकसाय-तिरिक्खमणुस-देवाउ-तिरिक्ख-मणुस-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्म-इयसरीर-

पंचसंठाण-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्म-इयसरीर-पंचसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-पंचसंघडणं-वण्ण-गंध-रस-फास-तिरि-क्ख-मणुस-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-दो-विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ सासणस-म्मादिट्ठीहि बज्झमाणियाओ । एदासिमुदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, एत्थ एदासिं बंधोदयवोच्छेदाभावादो।

ʿपंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-बादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइ-माणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं परोदओ बंधो, सोद-एण बंधविरोहादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधुवलंभादो ।

ʿपंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सोलसकसाय-भय-दुगुंछा-तिरिक्ख-मणुस-देवाउ-पंचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-

----

< पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, आठ नोकषाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, पांच संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक अंगोपांग, पांच संहनन, वर्ण, गन्ध रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊंच गोत्र और पांच अन्तराय, ये प्रकृतियां सासादनसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा बध्यमान हैं । इनका बन्ध उदयसे पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता हैं, यह विचार नहीं हैं, क्योंकि, यहां इनकेबन्ध और उदयकेव्युच्छेदका अभाव है । >

< पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका परोदय बन्ध होता हैं, क्योंकि, स्वोदयसे इनकें बन्धका विरोध है । शेष प्रकृ-

तियोंका बन्ध स्वोदय-परोदयसे होता हैं, क्योंकि दोनों प्रकारोंसे भी उनका बन्ध पाया जाता है ।
>

< पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरु- >

परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाणुवलंभादो । सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोगित्थिवेद-मज्झिमच-उसंठाण-पंचसंघडण-उज्जोव-दो-विहायगइ-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो बंधो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो । पुरिसवेदस्स बंधो सांतर-णिरंतरो, पम्म-सुक्कलेस्सिएसु तिरिक्ख-मणुस्सेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । देवगइ-वेउव्वियदुग-समचउरससंठाण-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो, असंखेज्जवासाउएसु सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरंतरबंधुवलंभादो मणुसगइदुगस्स बंधो सांतर-णिरंतरो, आणदादिदेवेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । तिरिक्ख-गइदुग-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो, सत्तमपुढवीणेरइएसु णिरंतर-बंधुवलंभादो । ओरालियसरीरदुगस्स वि सांतर-णिरंतरो बंधो, देव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो ।

देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं छादालीस पच्चया, वेउव्वियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयाणमभावादो । मणुस-तिरिक्खाउआणं सत्तेतालीस पच्चया, ओरालिय-वेउ-व्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । अवसेसाणं पयडीणं पंचास पच्चया, पंच-मिच्छत्तपच्चयाणमभावादो ।

< लघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पांच अन्त-रायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम नहीं पाया जाता । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्त्रीवेद, मध्यम चार संस्थान, पांच संह-नन, उद्योत, दो विहायोगतियां, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविश्राम देखा जाता हैं ।

पुरुषवेदका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, पद्म और शुक्ल लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । देवगतिद्विक, वैक्रियिकद्विक, समचतुरस्त्र-संस्थान, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, असंख्यातवर्षायुष्क और शुभ तीन लेश्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगतिद्विकका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, अनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । तिर्यग्गतिद्विक और नीचगोत्रका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । औदारिकशरीर-द्विकका भी सान्तर-निरन्तर बन्ध होता हैं, क्योंकि, देव व नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । >

< देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके छ्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकद्विक, औदारिकमिश्र और कार्मण काययोग प्रत्ययोंका अभाव हैं । मनुष्यायु और तिर्यगायुके सैंतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका अभाव हैं । शेष प्रकृ-तियोंके पचास प्रत्यय हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंके पांच मिथ्यात्व प्रत्ययोंका अभाव है । >

सम्मत्तमग्गणाए बंधसामित्तं

ʻदेवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं बंधो देवगइसंजुत्तो । मणुसाउ-मणुसगइदुगाणं मणु-सगइसंजुत्तो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो । ओरालिय-सरीर-मज्झि-ामचउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो । उच्चागोदस्स देव-मणुसगइसंजुत्तो बंधो, तिरिक्खेसुच्चागोदाभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो तिग-इसंजुत्तो, णिरयगइबंधाभावादो । देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाणं पयडीणं बंधस्स सामी चउगइसासणा । बंधुध्दाणं बंधवोच्छेदो च णत्थि । छादालीस धुवबंधपयडीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अद्धुवो, अद्धुवबंधित्तादो।

ʻसम्मामिच्छाइट्ठी असंजदभंगो ।। ३१८ ।।

ʻपंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउ-व्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-वज्जरि-

----

< देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका बन्ध देवगति संयुक्त होता है । मनुष्यायु और मनुष्यगतिद्विकका बन्ध मनुष्यगति संयुक्त होता है । तिर्यगायु तिर्यग्गतिद्विक और उद्योतका बन्ध तिर्यग्गति संयुक्त होता हैं । औदारिकशरीर, मध्यम चार संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, पांच संहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। उच्चगोत्रका देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यंचोंमें उच्चगोत्रका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंके नरकगतिके बन्धका अभाव है । >

< देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी चारों गतियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छेद नही है । छ्यालीस ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुवबन्धया अभाव है, शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, वे अध्रुवबन्धी है । >

‘सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंकी प्ररुपणा असंयत जीवोंके समान है ।। ३१८ ।’

< पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्त्रसंस्थान, औदारिक व वैक्रियिक अंगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी >

छक्खंडागमे बंधसामित्तविचओ

‘सहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-थावर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयपयडीओ सम्मामिच्छाइट्ठीहि बज्झमाणियाओ । उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति एसो विचारो णत्थि, पयडीणमेत्थ बंधोदयवोच्छेदाणुवलंभादो ।’

‘पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-पंचिंदियजादि-तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेय-सरीर-थिराथिर-सुहासुह-

णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-समचउरससंठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चा-गोदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधुवलंभादो । मणुसगइ-देवगइ-ओरालिय-वेउव्वियसरीर-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-मणुसगइ-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वीणं परोदओ बंधो, सोदएण बंधविरोहादो ।

पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-भय दुगुंछा-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरा-

----

< अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियां सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों द्वारा बध्यमान हैं । उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता हैं, यह विचार यहा नही है; क्योंकि, यहा उक्त प्रकृतियोंके बन्ध और उदयका व्युच्छेद नही पाया जाता है । >

< पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहां ये ध्रुवोदयी है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषेवद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्त्रसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका बन्ध स्वोदय-परोदय होता हैं, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी इनका बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति, देवगति, औदारिकशरीर वैक्रियिकशरीर, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानु-पूर्वीका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनकेबन्धका विरोध है । >

< पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, >

ʼलिय-वेउव्वियअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणुच्चागोद-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एत्थ धुवबंधदंस-णादो । सादासाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीणं सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमदंसणादो ।ʻ

ʼमणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरंगोवंग-वज्जरिसहसंघडणाणं बादाल स पच्चया, ओरालियकायजोगाभावादो । देवगइ-देवगइ-पाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवगाणं पि बादालीस पच्चया, वेउ-व्वियकायजोगाभावादो । अवसेसाणं तेदालीस पच्चया, पंचमिच्छत्ताणंत्ताणुबंधिचउ-क्कोरालिय-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं बंधो मणुसगइसंजुत्तो । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं देवगइसंजुत्तो । सेससव्वपयडीणं देव-मणुसगइसंजुत्तो । मणुसगइदुगोरालियदुग-वज्जरिसहसंघडणाणं देव-णेरइया सामी । देवगइ-वेउव्वियदुगाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाणं पयडीणंʻ

< समचतुरस्रसंस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायो-गति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहां इनका ध्रुवबन्ध देखा जाता है । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयश-कीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविश्राम देखा जाता है । >

< मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिक शरीर, औदारिकशरीरांगोपांग और वज्रर्षभसंहननके ब्यालीस प्रत्यय है, क्योंकि, औदारिककाययोगका अभाव है । देवगति, देवगति-प्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगके भी ब्यालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहां वैक्रियिककाययोगका अभाव है । शेष प्रकृतियोंके तेतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, पांच मिथ्यात्व,

अनन्तानुबन्धिचतुष्क, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका मिश्र-गुणस्थानमें अभाव है । >

< मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्रर्षभसंहननका बन्ध मनुष्यगतिसे संयुक्त होता हैं । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका बन्ध देवगति संयुक्त होता हैं । शेष सब प्रकृतियोंका बन्ध देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त होता है । मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक व वज्रर्षभसंहननके देव व नारकी स्वामी हैं । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी चारों गतियोंके सम्यग्मिथ्यादृष्टि हैं । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, >

< छ. बं. ४९ >

छक्खंडागमे बंधसामित्तविचओ

‘बंधस्स सामी चउगइसम्मामिच्छाइट्ठिणो । बंधध्दाणं णत्थि, एक्कम्हि अध्दाणविरोहादो । बंधवोच्छेदो वि णत्थि, एत्थ सव्वासिं बंधुवलंभादो । धुवबंधिपयडीणं तिविहो बंधो, धुवाभावादो । सेसाणं सादि-अध्दुवो,अध्दुवबंधित्तादो ⁄

‘मिच्छाइट्ठीणमभवसिध्दियभंगो ।। ३१९ ।⁄

‘सुगममेदं सुत्तं, विसेसाभावादो । णवरि धुवबंधिपयडीणं चउव्विहो बंधो, सादि-सांतर-बंधुवलंभादो ⁄

‘सण्णियाणुवादेण सण्णीसु जाव तित्थयरे त्ति ओघभंगो ।। ३२० ।⁄

‘एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-आदाव-थावर-सुहुम-साहारणाणं परो-दयत्तुवलंभादो पंचिंदियजादि-तस-बादराणं सोदयबंधुवलंभादो णेदं सुत्तं जुज्जदे? ग्र

< एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । बन्धव्युच्छेद भी नही हैं, क्योंकि, यहां सब प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । उनतालीस प्रत्यय होते हैं । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धका यहां अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं । >

‘मिथ्यादृष्टि जीवोंकी प्ररुपणा अभव्यसिध्दिक जीवोंके समान है ।। ३१९ ।⁄

< यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, यहां कोई विशेषता नहीं है, भेद इतना है कि ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका यहां चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, सादि व सान्तर अर्थात् अध्रुव बन्ध पाया जाता है ।>

ʿसंज्ञिमार्गणानुसार संज्ञी जीवोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररुपणा है ।। ३२० ।।

ʿशंका-< चूंकि यहां एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण प्रकृतियोंका बन्ध परोदयसे और पंचेन्द्रिय जाति, त्रस व बादरका बन्ध स्वोदयसे पाया जाता है, अतएव यह सूत्र युक्त नही हैं ? >

ʿसमाधान-< यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, देशामर्शक सूत्रोंमें इस प्रकारकी विशेषता >

ʿदेसामासियसुत्तेसु एवंविहभेदाविरोहादो । पयडिबंधध्दाणणिबंधणभेदपदप्पायणटमाह-

ʿणवरि विसेसो सादावेदणीयस्स चक्खुदंसणिभंगो ।। ३२१ ।।

ʿसुगममेदं ।

ʿअसण्णीसु अभवसिध्दियभंगो ।। ३२२ ।।

ʿपंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोक-कसाय-चउआउ-चउगइ-पंचजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियअंगोवंग-छसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-चउआणुपुव्वी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्ता-पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोदं-पंचंतराइयपयडीओ असण्णीहि बज्झमाणियाओ । उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति परिक्खा णत्थि, एत्थे-दासिं बंधोदयवोच्छेदाभावादो ।

< विरोधसे रहित हैं ।>

< प्रकृतियोंकेबन्धाध्वाननिमित्तक भेदकेप्ररुपणार्थ सूत्र कहते हैं- >

ʿपरन्तु विशेषता इतनी है कि सातावेदनीयकी प्ररुपणा चक्षुदर्शनी जीवोंके समान है ।। ३२१ ।।

< यह सूत्र सुगम हैं । >

ʿअसंज्ञी जीवोंमें बन्धोदयव्युच्छेदादिको प्ररुपणा अभव्यसिध्दिक जीवोंके समान है ।। ३२२ ।।

< पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, चार आयु, चार गतियां, पांच जातियां, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, छह संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, चार आनुपूर्वी, अगुरुलघु उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊंच गोत्र और पाच अन्तराय, ये प्रकृतियां असंज्ञी जीवोंकें द्वारा बध्यमान है । उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता हैं, यह परीक्षा यहां नहीं है; क्योंकि, यहां इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है । >

छक्खंडागमे बंधसामित्तविचओ

ʿपंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-मिच्छत्त-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-णीचागोद-पंचंतराइय-तिरिक्खाउ-तिरि-क्खगईणं बंधो सोदओ । णिरय-देवाउ-णिरय-देवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअं-गोवंग-णिरय-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोद-मणुसाउ-मणुसगइदुगाणं परोदओ बंधो पंचंदसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-णवणोकसाय-पंचजादि-ओरालियसरीर-छसं-ठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-छसंघडण-तिरिक्खाणुपुव्वी-आदाउज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-सरीर-सुभग-दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्तीणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधविरोहाभावादो । उवघाद-परघाद-उस्सासाणं पि सोदय-परोदओ, अपज्जत्तकाले उदएण विणा वि बंधुवलंभादो ।

ʻपंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीय-मिच्छत्त-सोलसकसाय-भय-दुगुंछ-चउआउ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, एगसमएण बंधुवरमाभावादो । सादासाद-सत्तणोकसाय-णिरय-मणुस-देवगइ-पंचजादि-ओरालिय-वेउव्वियसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-

----

< पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण, नीचगोत्र, पांच अन्तराय तिर्यगायु और तिर्यग्गतिका बन्ध स्वोदय होता है । नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति वैक्रियिकशरीर वैक्रियिकशरीरांगोपांग, नरकगति व देवगति, प्रायोग्यानुपूर्वी, उच्चगोत्र, मनुष्यायु और मनुष्य-गतिद्विकका परोदय बन्ध होता है । पांच दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कषाय, नौ नोकषाय, पांच जातिया, औदारिकशरीर, छह संस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, छह संहनन, तिर्यगानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका बन्ध स्वोदय-परोदय होता हैं, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी इनके बन्धका कोई विरोध नहीं हैं । उपघात, परघात और उच्छ्वासका भी स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उदयके विना भी इनका बन्ध पाया जाता है । >

< पांच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भय, जुगुप्सा, चार आयु, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है । साता व असाता वेदनीय, सात नोकषाय, नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, पाँच जाति, औदारिक-शरीर, वैक्रियिकशरीर, छह संस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरांगोपांग, छह संहनन, >

ʻछसंघडण-णिरय-मणुस-देवाणुपुव्वी-परघादुस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दूभ-ग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाणं सांतरो बंधो, एगसमएण वि

बंधुवरमदंसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालिय-सरीर-णीचागोदाणं बंधो सांतर-णिरंतरो, तेउ-वाउकाइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो ।

ʿअसण्णीसु पणदालीस पच्चया सव्वपयडीणं, वेउव्वियदुग-चउविहमण-तिविहव-चिजोग-माणसासंजमाभावादो । णवरि णिरय-देवाउअ णिरय-गइ-देवगइ-णिरयगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं तेदालीस पच्चया, ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । मणुस्स-तिरिक्खाउआणं चोदालीस पच्चया, कम्मइयपच्चयाभावादो । सादावेदणीय-इत्थि-पुरिसवेद-हस्स-रदि-समचउर-ससंठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं बंधो तिगइसं-जुत्तो, णिरयगईए अभावादो । णिरयाउ-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीणं णिरय-गइसंजुत्तो । मणुसाउ-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मणुसगइसंजुत्तो । देवाउ-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणं देवगइसंजुत्तो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइ-

----

< नारकानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, देवानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतियां, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता हैं । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर और नीचगोत्रका बन्ध सान्तर-निरन्तर होता है, क्योंकि, तेज व वायुकायिक जीवोंमें इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । >

< असंज्ञी जीवोंमें सब प्रकृतियोंके पैतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके वैक्रियिकद्विक, चार प्रकारका मन, अनुभय वचनयोगके विना तीन प्रकारका वचन योग और मन जनित असंयम प्रत्ययोंका अभाव है । विशेषता यह हैं कि नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, नरकगति व देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगके तेतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्यययोंका अभाव है । मनुष्यायु और तिर्यगायुके चवालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, कार्मण प्रत्ययका अभाव है । >

< सातावेदनीय, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य, रति, समचतुरस्त्रसंस्थान, प्रशस्तविहयोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिका बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है,

क्योंकि, इनके साथ नरकगतिके बन्धका अभाव है । नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध नरकगतिसंयुक्त होता हैं । मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मनुष्य-गतिसंयुक्त बन्ध होता है । देवायु, देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका देवगतिसंयुक्त बन्ध >

‘पाओग्गाणुपुव्वी-एइंदिय-बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिदियजादि-आदावुज्जोव-थावर-सुहम-साहारणसरीराणं तिरिक्खगइसंजुत्तो बंधो । वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंगाणं देव णिरयगइसंजुत्तो । ओरालियसरीर ओरालियसरीरअंगोवंग-मज्झिमचउसंठाण-छसं-घडण-अपज्जत्ताणं तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो बंधो । णउंसयवेद-हुंडसंठाण-अप्पसत्थवि-हायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं तिगइसंजुत्तो बंधो, देवगईए अभावादो । उच्चागोदस्स दुगइसंजुत्तो, णिरय-तिरिक्खगईणं अभावादो । अवसेसाणं पयडीणं बंधो चउगइसंजुत्तो ’

‘तिरिक्खा चेव सामी, अण्णत्थासण्णीणमभावादो । बंधध्दाणं णत्थि, एक्कम्हि अध्दाणविरोहादो । बंधवोच्छेदो वि णत्थि, बंधुवलंभादो । सत्तेतालीसधुवबंधिपयडीणं चउव्विहो बंधो । सेसाणं सादि-अध्दुवो, पडिवक्खबंधाणुवलंभादो ’

‘आहाराणुवादेण आहारएसु ओघं ।। ३२३ ।’

‘एदस्स सुत्तस्स जघा ओघम्हि परुवणा कदा तघा कायव्वा, णवरि सव्वत्थ कम्म-इयपच्चओ अवणेयव्वो। चदुण्णमाणुपुव्वीणं बंधो परोदओ । उवघादस्स सोदओ ’

< होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणशरीरका तिर्यग्गतिसंयुक्त बन्ध होता है । वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरांगोपांगका देव व नरक गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरांगोपांग, मध्यम चार संस्थान, छह संहनन और अपर्याप्तका तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता हैं । नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका तीन गतियोंसे संयुक्त होता हैं, क्योंकि, इनके साथ देवगतिकेबन्धका अभाव है । उच्चगोत्रका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, उसकेसाथ

नरक और तिर्यग्गतिका बन्ध नहीं होता । शेष प्रकृतियोंका बन्ध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है । >

< तिर्यंच जीव ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें असंज्ञी जीवोंका अभाव है । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । बन्धव्युच्छेद भी नहीं है, क्योंकि, बन्ध पाया जाता हैं । सैंतालीस ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता हैं, क्योंकि, इनके प्रतिपक्ष अर्थात् अनादि व ध्रुव बन्ध नही पाये जाते हैं । >

‘आहारमार्गणानुसार आहारक जीवोंमें ओघकेसमान प्ररुपणा है ।। ३२३ ।’

< इस सूत्रकी जैसे ओघमें प्ररुपणा की गई है उसी प्रकार यहां भी करना चाहिये । विशेषत्ता केवल इतनी है कि सर्वत्र कार्मण प्रत्ययको कम करना चाहिये । चार आनुपूर्वियोंका बन्ध परोदय होता है । उपघातका स्वोदय बन्ध होता है । >

आहारमग्गणाए बंधसामित्तं

‘अणाहारएसु कम्मइयभंगो ।। ३२४ ।’

‘पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-असादावेदणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्ज-त्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमि-णुच्चागोद-पंचंराइयपयडीओ तीहि गुणट्ठाणेहि बज्झमाणियाओ । एदासिमुदयपुव्वावरकालसंबधिबंधवोच्छेदपरीक्खा णत्थि, सव्वासिमेत्थ बंधोदयदंसणादो ।’

‘पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं सोदओ बंधो, धुवोदयत्तादो । ओरालियसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थ-विहायगइ-पत्तेयसरीर-सुस्सराणं परोदओ बंधो, सोदएण एत्थ बंधविरोहादो । णिद्दा-पयला-असादावेदणीय-बारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-

----

ʿअनाहारक जीवोंमें कार्मणकाययोगियोंके समान प्ररुपणा है ।। ३२४ ।।ʾ

< पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्त्रसंस्थान, औदारिकशरीरांगोपांग, वज्रर्षभसंहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियां तीन (मिथ्यादृष्टि, सासादन, अविरतसम्य-ग्दृष्टि) गुणस्थानों द्वारा बध्यमान हैं । इन प्रकृतियोंके उदयव्युच्छेदकें पूर्वापर कालसम्बन्धी बन्धव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं हैं, क्योंकि सब प्रकृतियोंका यहां बन्ध और उदय देखा जाता है ।>

< पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता हैं, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । औदारिकशरीर, समचतुरस्त्रसंस्थान, औदारिकशरीरागोपांग, वज्रर्षभ-संहनन, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्वरका परोदय बन्ध होता हैं, क्योंकि, स्वोदयसे यहा इनके बन्धका विरोध है । निद्रा, प्रचला, असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका स्वोदय-परोदय बन्ध होता हैं, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके>

छक्खंडागमे बंधसामित्तविचओ

ʿसोग-भय-दुगुंछा-सुभग-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चांगोदाणं सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंधविरोहाभावादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधो मिच्छा-इट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ। असंजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ चेव, सोद-एण बंधविरोहादो । पंचिंदियजादि-तस-बादर-पज्जत्ताणं मिच्छाइट्ठीसु बंधो सोदय-परोदओ, पडिवक्खुदयदंसणादो । सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो ।ʾ

ʼपंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-बारसकसाय-भय-दुगुंछ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उवघाद-णिमिण-पंचंतराइयाणं णिरंतरो बंधो, धुव-बंधित्तादो । असादावेदणीय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अज-सकित्तीणं सांतरो बंधो । पुरिसवेदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो । असं-जनसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । एवं समचउरससंठाण-वज्ज-रिसहसंघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणं पि वत्तव्वं । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सांतरो णिरंतरो, आण-दादिदेवेसुप्पज्जिय विग्गहगईए वट्टमाणेसु णिरंतरबंधुवलंभादो । असंजदसम्मादिट्ठीसु

< बन्धका विरोध नहीं हैं । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय होता है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, बादर और पर्याप्तका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय होता हैं, क्योंकि, यहां इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । >

< पांच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं । असातावेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है । पुरुषवेदका मिथ्या-दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर होता हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । इसी प्रकार सम-चतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभसंहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रके भी कहना चाहिये । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृ-ष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, आनतादिक देवोंमें उत्पन्न होकर विग्रहगतिमें वर्तमान जीवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध >

ʿणिरंतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पंचिंदियजादि-ओरालियसरीरअंगोवंग-पर-घादुस्सास-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराणं मिच्छाइट्ठिम्हि सांतर-णिरंतरो, सणक्कु-मारादिदेव-णेरइएसु णिरंतरबंधुवलंभादो । विग्गहगदीए कधं णिरंतरदा? ण, सतिं पडुच्च णिरंतरत्तुवदेसादो । सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु णिरंतरो, पडिव-क्खपयडिबंधाभावादो । एवमोरालियसरीरस्स वि वत्तव्वं >

ʿमिच्छाइट्ठिस्स तेदालीस, सासणस्स अट्ठत्तीस, असंजदसम्मादिट्ठिस्स तेंत्तीस पच्चया । मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीणं बंधो मणुसगइसंजुत्तो । ओरालिय-सरीर-ओरालियसरीररंगोवंगाणं मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइ-संजुत्तो । असंजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो । एवं वज्जरिसहवइरणारायणसरीर-संघडणस्स वि वत्तव्वं । उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसंजुत्तो, असंजदसम्मादिट्ठीसु देव मणुसगइसंजुत्तो । सेसाणं पयडीणं बंधो मिच्छाइट्ठि-सासण-सम्मादिट्ठीसु तिरिक्खमणुसगइसजुत्तो, एदेसिमपज्जत्तकाले देव-णिरयगईणं बंधा—

< होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव हैं । पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक-शरीरांगोपांग, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुण-स्थानमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सनत्कुमारादि देव और नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । >

ʿशंका—< विग्रहगतिमें बन्धकी निरन्तरता कैसे सम्भव हैं ? >

ʿसमाधान—< नहीं, क्योंकि, शक्तिकी अपेक्षा उसकी निरन्तरता का उपदेश है । >

< सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनके प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । इसी प्रकार औदारिकशरीरके भी कहना चाहिये । >

< मिथ्यादृष्टिके तेतालीस, सासादनसम्यग्दृष्टिके अडतीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके तेतीस प्रत्यय हैं। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्ध मनुष्यगतिसंयुक्त होता है । औदा-रिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है ।

इसी प्रकार वज्रर्षभवज्रनाराचशरीरसंहननके भी कहना चाहिये। उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें मनुष्यगतिसंयुक्त, तथा असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है, क्योंकि, इनके अपर्याप्तकालमें देव व नरक गतिके >

ʿभावादो । असजदसम्मादिट्ठीसु देवमणुसगइसंजुत्तो, तत्थण्णगईणं बंधाभावादो ।

ʿमणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंगाणं चउगइ-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठी सामी, देव-णिरयगइअसंजदसम्मादिट्ठी सामी । एवं वज्जरिसहसंघडणस्स वि वत्तव्वं । सेसाणं पयडीणं चउगइमिच्छाइट्ठि-सासणस-म्मादिट्ठि-असंजदसमादिट्ठिणो सामी । बंधध्दाणं सुगमं । बंधवोच्छेदो च सुगमो । धुव-बंधीणं बंधो मिच्छाइट्ठीसु चउव्विहो, सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु तिविहो । सेसाणं पयडीणं सव्वत्थ सादि-अध्दुवो ।

ʿथीणगिध्दितिय-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउसंठाण-चउसंघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दूभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचा-गोदाणं दुट्ठाण-पयडीणं वुच्चदे-अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेदाणं बंधोदया समं वोच्छि-ण्णा । दुभगाणादेज्ज-णीचागोद-तिरिक्खदुगाणं पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि । अवसेसाणं पयडीणं बंधवोच्छेदो चेव, एत्थुदयविरोहादो । अणंताणुबंधिचउक्कित्थिवेद-तिरिक्खगइदुग-दूभगाणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बंध-

----

< बन्धका अभाव है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । >

< मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर और औदारिकशरीरांगोपांगके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि, तथा देवगति व नरकगतिके असंयतसम्य-ग्दृष्टि स्वामी हैं । इसी प्रकार वज्रर्षभसंहननके भी कहना चाहिये । शेष प्रकृतियोंकें चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है ।

बन्धव्युच्छेद भी सुगम है । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें चारों प्रकारका होता हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंमे तीन प्रकारका बन्ध होता हैं । शेष प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।>

< स्त्यानगृध्दित्रय, अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यग्गति, चार संस्थान, चार संहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र इन द्विस्थान प्रकृतियोंकी प्ररुपणा करते हैं- अनन्तानुबन्धिचतुष्क और स्त्रीवेदका बन्ध व उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होता हैं । दुर्भग, अनादेय, नीचगोत्र और तिर्यग्गतिद्विकका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता हैं । शेष प्रकृतियोंका केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, यहां उनके उदयका विरोध है । अनन्तानुबन्धिचतुष्क, स्त्रीवेद, तिर्यग्गतिद्विक, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रका बन्ध स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनकेबन्धका विरोध >

आहारमग्गणाए बंधसामित्तं

'विरोहाभावादो । सेसाणं परोदओ बंधो, एत्थुदयाभावादो । थीणगिध्दितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं णिरंतरो बंधो, अणेगसमय-बंधसत्तिसंजुत्तादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णीचागोदाणं मिच्छाइट्ठीसु सांतर-णिरंतरो, तेउ-वाउकाइएसु विग्गहं काऊणुप्पण्णाणं तत्तो विग्गहगईए गयाणं सत्तमपुढवीदो विग्गहं काऊण णिग्ग-याणं च णिरंतरबंधुवलंभादो । सासणम्मि सांतरो, एगसमएण वि बंधुवरमसत्तिदंस-णादो । सेसाणं पयडीणं बंधो सव्वत्थ सांतरो, साभावियादो । पच्चया सुगमा । तिरि-क्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोवाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो । चउसंठाण-चउसंघडणाणं तिरि-क्खमणुसगइसंजुत्तो । इत्थिवेदस्स दुगइसंजुत्तो, देव-णिरयगईणमभावादो । अप्पसत्थ-विहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि सासणे दुगइसंजुत्तो देव-णिरयगईणमभावादो । थीणगिध्दितिय-अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठिम्हि सासणें दुगइसंजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावादो । चउगइमिच्छाइट्ठि-तिगइ सासणस-म्मादिट्ठिणो सामी । बंधध्दाणं बंधवोच्छेदट्ठाणं च सुगमं । धुवबंधीणं बंधो मिच्छाइट्ठिम्हि

< नहीं है । शेष प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता हैं, क्योंकि, यहां उनका उदयाभाव है । स्त्यान-गृध्दित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका निरन्तर बन्ध होता हैं, क्योंकि, ये अनेक समयरुप बन्ध-शक्तिसे संयुक्त हैं । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक जीवोंमें विग्रह करके उत्पन्न हुए, उसकेब्बाद विग्रहगतिमें गये हुए, तथा सप्तम पृथिवीसे विग्रह करके निकले हुए जीवोंके उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । सासादन गुणस्थानमें उनका सान्तर बन्ध होता हैं, क्योंकि, एक समयसे भी बन्धविश्रामशक्ति देखी जाती है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र सान्तर होता हैं, क्योंकि ऐसा स्वभाव है। प्रत्यय सुगम हैं । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । चार संस्थान और चार संहननका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता हैं । स्त्रीवेदका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहां उक्त दो गुणस्थानोंमें देव व नरक गतिके बन्धका अभाव हैं । अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर अनादेय और नीचगोत्रका बन्ध मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, देव व नरक गतिके बन्धका अभाव है । स्त्यानगृध्दित्रय और अनन्ता-नुबन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, नरक व देव गतिके बन्धका अभाव हैं । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि और तीन गतिके सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । बन्धाध्वान व बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम हैं । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका होता है । सासादन गुणस्थानमें तीन >

छक्खंडागमे बंधसामित्तविचओ

ʻचउव्विहो । सासणे तिविहो, धुवाभावादो ।ʼ

ʻमिच्छत्त-णवुंसयवेद-चउजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणमेगट्ठाणाणं वुच्चदे- उदयादो बंधो पुव्वं पच्छा वा वोच्छिण्णो त्ति (विचारो) मिच्छत्त-चउजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्ताण णत्थि, अक्क-मेण बंधोदयवोच्छेददंसणादो । णउंसयवेदस्स पुव्वं बंधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेददंसणादो । हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-साहारणसरीराणं बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदो णत्थि, अभावस्स भावपुरंगमत्तदंस-णादो । च च एदासिं पयडीणं विग्गहगदीए उदओ अत्थि,

अणुवलंभादो । मिच्छत्तस्स बंधो सोदएण, णउंसयवेद-चउजादि-थावर-सुहुम-अपज्जत्ताणं सोदय-परोदएण, हुंड-संठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-आदाव-साहारणाणं परोदएण । मिच्छत्तस्स बंधो णिरंतरो । सेसाणं सांतरो, णियमाभावादो । पच्चया सुगमा । मिच्छत्तणउंसयवेद-हुंडसंठाण-असं-पत्तसेवट्टसंघडण-अपज्जत्ताणं बंधो तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो । चउजादि आदाव-थावर सुहुम-साहारणाणं तिरिक्खगइसंजुत्तो । मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्ट-संघडणाणं चउगइमिच्छाइट्ठी सामी । एइंदिय-आदाव-थावराणं तिगइमिच्छाइट्ठी

< प्रकारका बन्ध होता है: क्योंकि, वहां ध्रुवबन्धका अभाव है । >

< मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, चार जातियां, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर, इन एकस्थान प्रकृतियोंकी प्ररुपणा करते हैं- उदयसे बन्ध पूर्व या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है यह विचार मिथ्यात्व, चार जातियां, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्त प्रकृतियोंके नहीं है क्योंकि, इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद एक साथ देखा जाता है । नपुंसकवेदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, असं-यतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उसका उदयव्युच्छेद देखा जाता है । हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटि-कासंहनन, आताप और साधारणशरीरका केवल बन्धव्युच्छेद ही हैं, उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, अभाव भावपूर्वक देखा जाता है । और इन प्रकृतियोंका विग्रहगतिमें उदय हैं नही, क्योंकि, वहां वह पाया नही जाता । मिथ्यात्वका बन्ध स्वोदयसे; नपुंसकवेद, चार जातिया, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तका स्वोदय-परोदयसे; तथा हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन, आताप और साधारणशरीरका परोदयसे बन्ध होता है । मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता हैं, क्योंकि, उनके बन्धका नियम नही है । प्रत्यय सुगम हैं । मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासंहनन और अपर्याप्तका बन्ध तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त होता है । चार जातियां, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका तिर्य-ग्गतिसंयुक्त बन्ध होता है । मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसंस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासंहननके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं । एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके तीन गतियोंके>

आहारमग्गणाए बंधसामित्तं

ʻसामी, णिरयगईए अभावादो । बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-सुहुम-अपज्जत्त-साहार-णाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी, देव-णेरइएसु एदासिं बंधाभावादो । बंधध्दाणं णत्थि, एक्कम्हि अध्दाणविरोहादो । बंधवोच्छेदट्ठाणं सुगमं । मिच्छत्तबंधो चउव्विहो । सेसाणं सादि-अध्दुवो ⁄

ʻसादावेदणीयस्स अणाहारीसु बंधवोच्छेदो चेव, उदयवोच्छेदाभावादो । सव्वत्थ बंधो सोदय-परोदओ । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीसु सांतरो, पडिवक्खपयडिबंधुवलंभादो । सजोगिम्हि णिरतरो, पडिवक्खपयडिबंधाभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि सजोगिम्हि कम्मइयकायजोगपच्चओ एक्को चेव, अण्णेंसिम-संभवादो । मिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसंजुत्तो । असंजदसम्मा-दिट्ठीसु देव-मणुसगइसंजुत्तो । स्जोगीसु अगइसंजुत्तो । चउगइमिच्छाइट्ठि-असंजदस-म्मादिट्ठिणो तिगइसासणसम्माइट्ठिणो मणुसगइकेवलिणो च सामी । बंधध्दाणं बंधवो-च्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । सादि-अध्दुवो बंधो, साभावियादो ⁄

ʻदेवगइ-वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-तित्थयर-

----

< मिथ्यादृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नरकगतिमें इनके बन्धका अभाव है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि-न्द्रिय, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणके तिर्यंच और मनुष्य स्वामी है, क्योंकि, देव व नारकि-योंमें इनके बन्धका अभाव है । बन्धाध्वान नही हैं, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । बन्धव्युच्छेदस्थान सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है। शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है । >

< सातावेदनीयका अनाहारी जीवोंमें केवल बन्धव्युच्छेद ही हैं, क्योंकि, वहां उसके उदय-व्युच्छेदका अभाव है। सर्वत्र उसका, स्वोदय-परोदय बन्ध होता है । मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिका बन्ध पाया जाता है । सयोगकेवली गुणस्थानमें उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें केवल एक कार्मण काययोग प्रत्यय ही हैं, क्योंकि, अन्य प्रत्ययोंकी वहां सम्भावना नहीं हैं । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त

बन्ध होता है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें देवगति और मनुष्यगतिसे संयुक्त बन्ध होता है। सयोग-केवली जीवोंमें गतिसंयोगसे रहित बन्ध होता है । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि तीन गतिके सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिके केवली स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्न-स्थान सुगम हैं । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । >

< देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरांगोपांग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और >

छक्खंडागमे बंधसामित्तविचओ

ʿणामाणमसंजदसम्मादिट्ठिणा बज्झमाणाणं पयडीणं उच्चदे- एदासिं परोदएण बंधो । कुदो, साहावियादो । णिरंतरो, एगसमएण बंधुवरमसत्तीए अभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि देवगइचउक्कस्स णउंसयपच्चओ णत्थि। तित्थयरस्स देव-मणुसगइ-संजुत्तो । सेसाणं देवगइसंजुत्तो तित्थयरस्स तिरिक्खगईए विणा तिगइअसंजदसम्मा-दिट्ठिणो सामी । सेसाणं तिरिक्ख-मणुसा सामी । बंधध्दाणं बंधवोच्छिण्णट्ठाणं च सुगमं । सादि-अध्दुवो बंधो, अध्दुवबंधित्तादो ʾ

< एवं बंधसामित्तविचओ समत्तो । >

< तीर्थंकर नामकर्म, इन असंयतसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा बध्यमान प्रकृतियोंकी प्ररुपणा करते हैं- इनका परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविश्रामशक्तिका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेषता इतनी है कि देवगति-चतुष्कके नपुंसकवेद प्रत्यय नहीं हैं । शेष प्रकृतियोंका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । तीर्थंकर प्रकृतिका देव और मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है । तीर्थंकर प्रकृतिके तिर्यग्गतिके विना तीन गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी प्रकृतिया हैं । >

< इस प्रकार बन्धस्वामित्वविचय समाप्त हुआ । >